रात्रि क्लास 6-5-68 [illegible] किस बात पर है?

इसको कहा जाता है सर्विस समाचार। दुनिया भर में है जिसमानी सर्विस समाचार जिसको सोसलवर्क बकर्स कहते हैं। तुम बच्चे हो स्प्रीचूअल वकर्स। सोसल वर्कस स्प्रीचूअल ववर्कस नहीं कहला ये जाते हैं। तुम्हारी ज़ात ही दुनियासे न्यारी। तुम हो ब्राहमण कुल के। यह कुल तुम्हारा ऊंच है। तुम्हारा ब्राहमण कुल है पवित्र बनने का। क्योंकि पवित्रब्राहमण बन फिरदेवता बनने वाले हो। देवतारं कोई सर्विस नहीं करते हैं। तुमसर्विस करते हो। कहा ही जाता है भारत माता। भारत की जो चैतन्य मातारं हैं वहसर्विस करती हैं। क्यासर्विस करती हैं। इस समय यहपुरानी धरणी है आयरन एजेड। उनको तुम गोल्डेनएजेधरणी बनाते हो। तुम भी गोल्डेन एजेड बनते हो। पारस पुरी के नाथ और नाथनी बनते हो। वहां तो मकान भी सोने की बनती है पारस नाथ कोई सोने का नहीं। इस समय सभी पत्थर बुधि हैं। पीछे आत्मा पारस बुधि बन जाती है। यह बातें और कोई की बुधि में नहीं हैं। विष्णु से वैष्णव अक्षर निकली है। वैष्णव है अहिंसक। आजकल के वैष्णव है हिंसक। उनको वैष्णव तोकहा नहीं जा सकता। एक दो पर काम कटारी चलाना यह हिंसा है। तुम बच्चे अहिंसक बन रहे हो। कोईसमय माया से हरा देते हो इसलिए सम्पूर्ण नहीं कहला सकते। अभी पुरुषार्थ कर रहे हो सम्पूर्ण बनने लिए। जितना2 याद करेंगे ... यह है श्रीमत पर अपनी सर्विस। टीचर भी सिखलाते हैं तो मेहनत से पास हो कमाने लग पड़ते हैं। यहां भी आत्माओं को मेहनत करनी पड़ती हैं। बाबा को याद करने की बच्चों कोबहुत2 प्रैक्टीस चाहिए। यह है नई बात। 5000 वर्ष पहले भी तुम बच्चों को सिखलाया था। इस समय तुम बच्चों की बुधि में रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। बाप की एक्टिविटी भी इस समय होता है। इस समय ही बाप पुरानी दुनिया कोनई बनाते हैं। रचयिता नई चीज़ रचने को कहा जाता है। यहपुरानी को नई बनाते हैं। नईदुनिया को क्रियेट करते हैं। पुरानी दुनिया का विनाश कराते है। अभी श्रीमत पर क्रियेट करा रहे हैं पुरानी दुनिया होते हुए। इसमें याद की सबजेक्ट है नम्बरवन। कालेज में पढ़ते हैं तोनम्बरवार सबजेक्ट होते हैं ना। यह भी बड़ी कालेज है। ईश्वरीय युनिवर्सिटी। गाड फादरली युनिवर्सिटी। ईश्वर को भी फादर कहते हैंना। यह भी तुम जानते हो बाप ने ये युनिवर्सिटी खोली है जहां हम पढ़ते हैं। बहुत गुप्त। यह बात भी बड़ी2 भूल जाते हैं। यहगाडली युनिवर्सिटी याद पड़े तो ठीक है। बाप ही याद पड़ेंगे। बाबा की युनिवर्सिटी कब होती नहीं हैं। यही है बाबा हमको पढ़ाते हैं। युनिवर्स अर्थात सारी सृष्टि। और किसकी युनिवर्सिटी है नहीं। युनिवर्स सारे विश्व को कहा जाता है। वह तो एक बाप की ही युनिवर्सिटी होती है। और कोई की होती नहीं। यहां का अक्षर भारतवासियों ने लिया है। अभी फिर गवर्मेन्ट कहती गवर्मेन्ट बिगर कोई युनिवर्सिटी अक्षर न रख सकते हैं। उनको क्या पता पाण्डव गवर्मेन्ट ऊंच ते ऊंच है। उनकोपता नहीं कौन सी गवर्मेन्ट ऊंची है। विजय किसकी हुई। गाया जाता है राम गयो रावण गयो जिनके बहु परिवार। तुम्हारी पाण्डव सम्प्रदाय बहुत ही छोटी है। रावण सम्प्रदाय का कितना बड़ा परिवार है। यह किसकी बुधि में बैठ नहीं सकता। गायन तो ठीक है। रावण का परिवार बहुत है। बच्चे जानते हैं हमारा तो एक ही देवी देवता धर्म है। वह कितने ढेर हैं। तो बच्चों को खुशी बहुत होनी चाहिए। तुम ब्राहमण बनते हो फिर प्रजापिता ब्रहमा के सन्तान बनते हो। बनते ही हो डाडे से वर्सा लेने। वह डाडा भी हो जाता तो बाप भी हो जाता। भारत में डाडे(दादा) का हक मुकर्रर है। अभी गवर्मेन्ट ने डाडे का हक बाप का हक कुछ न कुछ दे दिया है। परन्तु मिलता नहीं है। नहीं तो आजकल हक बहुत है। इस तुम भी का हक है। गाड फादरली बर्थ राईट है मुक्ति और जीवन मुक्ति का। मुक्तिमें जाकर फिर जीवन मुक्ति में आना है। मुक्ति को कहा जाता है शान्तिधाम। जीवनमुक्ति सुखधाम को कहा जाता है। जो नये2 पत्ते निकलते हैं उनका जरूर पहले मान होगा। उनकी गोल्डेनएज है। मिनीमम वाले एक जन्म में। बस खलास हो जाते हैं। बहुत हल्का एक्टस। वर्ष2 एक्टस का मान होता है। पाई पैसे वाले का इतना

मान नहीं। इसमें भी पहले आने वालों का मान बहुतहोता है। बाप कहते हैं कोई भी बातों मुंझते हो तो छोड़ दो। सूक्ष्म वतनआद की बातों में न जाओ। टाईम वेस्ट होता है। मन्मनाभव। टाईम वेस्ट न करो। समझ में नहीं आता है तो मुंझ कर पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। बाप कहते हैं आगे चल कर समझ में आवेगा। उतावला न करनी चाहिए। मूल बात है याद की। स्वदर्शन चक्र की, देवी गुणों की। जहां मुंझते हो वहां छोड़ दो। उतावलाई न करो। बाप सभी कुछ बतलाते हैं। रचना के आदि मध्य अन्त का सभी समाचार आपे ही सुनावेंगे। भक्ति मार्ग में तुम ने अनेक बार सुना है। इसमें कवसंशय सुशय नहीं उठ सकता। हम बाप के सन्तान हैं। ब्रदर्स हैं जरूर। परन्तु हम स्वर्ग में क्यों नहीं हैं। पुरानी दुनिया में क्यों हैं। जवाब कौन दे। शिव की जयन्ति भी मनाते हैं। बेहद का बाप जरूर स्वर्ग की स्थापना करेंगे। बेहद सुख शान्ति पवित्रता का वर्सा बाप से ही मिलता है। स्वर्ग मेहम सुखी था। तो जरूर कोई ड्रामा दैने वाला होगा ना। अभी बच्चे समझते हैं बरोबर बाबा स्वर्ग की स्थापना करते हैं। बेहद की रात्रि में बाबा आते हैं। आधा कल्प की रात और दिन। इस संगम पर आते हैं। यह सिवाय तुम बच्चों के कोईभी जानते नहीं। शिव रात्रि का भी अर्थ नहींसमझते। समझे तो स्टेम्पस बनादे। अगर किसकी बुधि में बैठे फिर भी आपस में कानफ्रेन्स करेंगे। फेडरेशन से पास करावेंगे। मैजोरिटी जब समझे तब पास करे। स्टेम्पस निकाले। सब से ऊंच बाप की स्टेम्पस है। नहीं। वास्तवमें वैल्यु एबुल स्टेम्पस है यह। एक ही त्रिमूर्ति शिव। सर्व का सदगतिदाता त्रिमूर्ति शिव उनका स्टेम्पस क्यों नहीं बनाते? तुम लिख भी सकते हो। यह तो जुल्म है और सभी की स्टेम्पस निकालते हैं। कब जनावरों के निकालते रहते। मोर का भी कब निकालते हैं। यह है नेशनल वर्ड्स। जब तकगवर्मेन्ट का कोई बड़ा आफिसर आद समझे सभी पास करे गवर्मेन्ट स्टेम्पस बनावे तब बहुत समझसकते हैं। तुम समझाओ तो ऐसे स्टेम्पस बनाने का आर्डर निकले। यहहो जावेगा सब से पुराना स्टेम्पस। परन्तु यहकुछ भी रहेंगे नहीं। खत्म हो जावेंगे। तुम बच्चों की कितनी वैल्यु है। इसलिए बाप का स्टेम्पस तो जरूर होना चाहिए। बच्चों को समझाना चाहिए सब से पहले तो इनका स्टेम्पस होना चाहिए। यह तो भारत को स्वर्ग बनाते हैं। सतयुग में तो स्टेम्पस आद होते ही नहीं। कुछ होगा सो तो आगे चल कर पता पड़ेगा। तो ऐसी2 बातें सुनानी है जो समझे इनकी तो बात ठीक है। हम तो तुच्छ बुधि हैं। यह बच्चियां तो बहुतऊंची रास्ता बताती हैं। बेहद के बाप का जिससे हम यह वर्सा लेते हैं। जो निमित बनते हैं बाप के साथ सबाई कराने। सभी का बुधि योग उन से लगाते हैं। उनका तो बहुत2 शक्रिया मानना चाहिए। जिस बाप से हम विश्व की बादशाही लेते हैं कितनी थैंकस देनी चाहिए। जो बच्चे रास्ता बताते हैं तो कहेंगे नाम्रेनी2 थैंकस। कल्प2 हम ऐसे ही इन ब्राहमणों से रास्ता मिलता है। इतना थैंकस तुमको देते नहीं हैं। जितना अज्ञान काल में मनुष्य देते हैं। बच्चों को अन्दर में बहुत2 खुशी होनी चाहिए। रोमांच खड़े हो जाते हैं। परिचय देने वाले का अन्दर में शुक्रिया। आप ने बहुत अच्छा रास्ता बताया निमित बनी। बाप का परिचयदे पुरुषार्थ कराई। इसलिए तुमको पैगम्बर मैसेन्जर कहा जाता है। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लो। बेज बड़ी अच्छी चीज है। अच्छा2 बनाने लिए पुरुषार्थ बहुत चल रहा है। इन से ऊंचा कुछ हो नहीं सकता। इन से तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। तुम इन से पहचान देते हो। सेकण्ड मे किसको जीवन मुक्ति का रास्ता बताओ। उनके लिए यह बेज है। तुम ब्राहमण हो ना। ब्राहमणों को चाहिए गीता। यह है गीता का एकदम तन्त। पैगाम तो देना है ना। आगे चल कर बहुत देर समझने को आवेंगे। ऊंच ते ऊंच बाप की बड़ाई की जाती है। इतनी फिर सपुत बच्चों की भी है। बहुत सपुत तब बनेंगे जबरोज अपना पोतामेल रखेंगे। हमारे में यह दोष है। इनको छोड़ना है। परन्तु किसके तकदीर में न है तो भूत छोड़ना बड़ा मुश्किल होता है। मोह लोभ भी ऐसा है। आधा कल्प का है। इन से अपने को छुड़ाना है। यह मेहनत का काम है। हरेक अपने दिल से पूछते रहें। कोई दुश्मनता घर में नहीं बैठा है। यह आधा कल्प का दुश्मन है। डाकू भी कहो। अच्छा ओम।